वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 436
ISBN 978-93-84003-28-9

श्री गौतम गणधर अभिषेक विधि एवं पूजा

–संकलन एवं रचना–

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

– प्रकाशक –

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण वी. नि. सं. 2540,श्रावण शु. 15 मूल्य
1100 प्रतियाँ 10 अगस्त 2014 16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
–: निर्देशक एवं सम्पादक :–
कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी
–: प्रबंध सम्पादक :–
जीवन प्रकाश जैन
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सन् 1972 में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला'' की स्थापना हुई। इस ग्रंथमाला के द्वारा अब तक 400 से अधिक ग्रंथों का लाखों की संख्या में प्रकाशन हो चुका है।

पूज्य माताजी ने बालक, युवा, वृद्ध तथा विद्वानों के लिए उपयोगी पुस्तकें लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। साहित्य सृजन की शृँखला में यह छोटी सी पुस्तक 'श्री गौतम गणधर अभिषेक विधि एवं पूजा'' का प्रकाशन हो रहा है। यह पुस्तक इस ''श्री गौतम गणधर वर्ष'' में सभी के लिए बहुत ही उपयोगी है।

जिनेन्द्रदेव का अभिषेक, पूजन कर्मों की निर्जरा में विशेष कारण है अतः सभी भव्य जीवों को प्रतिदिन अभिषेक पूजन अवश्य करना चाहिए। जिस प्रकार शरीर के लिए भोजन आवश्यक है उसी प्रकार आत्मा को स्वस्थ रखने और गृहस्थ जीवन को सुखी सम्पन्न बनाने के लिए धर्म अति आवश्यक है।

यह श्री गौतम गणधर वर्ष सभी के जीवन में रोग-शोक को दूर कर सुख शांति को प्रदान करे, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भगवान महावीर स्वामी के प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी हुए हैं। श्री गौतम स्वामी ने आज से 2570 वर्ष पूर्व श्रावण कृष्णा एकम् को भगवान महावीर स्वामी के समवसरण में जाकर दीक्षा लेकर भगवान का शिष्यत्व स्वीकार किया। उसी समय उन्हें अवधि और मनःपर्ययज्ञान प्रगट हो गया और भगवान की दिव्यध्वनि खिरने लगी।

इस छोटी सी पुस्तक 'श्री गौतम गणधर अभिषेक विधि एवं पूजा' में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने श्री गौतम गणधर अभिषेक विधि, गणधरवलय मंत्र अभिषेक की विधि दी है। इसके बाद भगवान महावीर स्वामी की पूजन, श्री गौतम गणधर स्वामी की पूजा एवं दिव्यध्वनि पूजा दी है। तीर्थंकरों के मुखकमल से निर्गत सर्वभाषामय दिव्यध्वनि की पूजा है। यह दिव्यध्वनि अठारह महाभाषा और सात सौ लघु भाषारूप होती है। तीनों कालों में तीन-तीन मुहूर्त तक खिरती है और गणधर, चक्रवर्ती, इन्द्रों के प्रश्न होने पर अन्य समय भी खिरती है। भगवान

की दिव्यध्वनि को, द्वादशांग को कोई भी लिपिबद्ध नहीं कर सकता। इसीलिए वर्तमान में चार अनुयोगों में निबद्ध श्रुत द्वादशांग का अंश कहलाता है। दिगम्बर जैन धर्म में अंग और पूर्वरूप आगम ग्रंथ नहीं माने गये हैं, किन्तु उनके अंशरूप में जिनवाणी उपलब्ध है।

'श्री गौतम गणधर वर्ष' में सभी भव्य जीवों के लिए उपयोगी यह पुस्तक पूज्य माताजी ने लघु रूप में तैयार की है। यह लघु होते हुए भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे सभी भव्यात्मा प्रतिदिन श्री गौतम स्वामी की प्रतिमा का अभिषेक, पूजन करें। गणधरवलय यंत्र जम्बूद्वीप में उपलब्ध हैं, जिसे मंगाकर आप उस यंत्र का विधिवत् अभिषेक करें, मंगल आरती करें। यह श्री गौतम गणधर वर्ष सभी के लिए मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय नमः।

दो शब्द

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का हम सभी पर परम उपकार है जो कि हमें नित्य नई बातों से अवगत कराती हैं। इनके जीवन का हर पल नई-नई कृतियों को लिए हुए होता है। इनकी लेखनी में, वाणी में सरस्वती का वास है।

षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर 16 पुस्तकों में संस्कृत में सिद्धान्तचिंतामणि टीका लिखकर जैन समाज को एक अमूल्य कृति प्रदान की है। अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट ग्रंथ का हिन्दी में अनुवाद किया है। आज सर्वत्र पूज्य माताजी द्वारा रचित इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र आदि विधानों की धूम मची है।

जिन्होंने चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त करके जैन भूगोल-जम्बूद्वीप, तीनलोक, तेरहद्वीप को धरती पर अवतरित किया है। जिनकी प्रेरणा से विश्व की सबसे बड़ी भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग मूर्ति मांगीतुंगी में निर्मित हो रही है।

पूज्य माताजी के मुखारविन्द से श्री गौतम स्वामी के वचनामृत को सुनकर हम सभी परम आनंद का अनुभव कर रहे हैं। पूज्य माताजी के दीर्घ जीवन की कामना करते हुए मैं उनके पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन करती हूँ।

गीत

रचयित्री – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–सावन का महीना.....

गौतम गणधर वाणी, है द्वादशांग का सार।
गौतम गणधर वर्ष मनाकर, बोलो जय जयकार।।टेक.।।

वीर प्रभू के शिष्य प्रथम, ये गणधर प्रमुख कहाये हैं।
नग्न दिगम्बर मुनि बनकर, मनपर्यय ज्ञान को पाये हैं।।
प्रभु की दिव्यध्वनि सुन, पा गये निजातम सार।
गौतम गणधर वर्ष मनाकर, बोलो जय जयकार।।1।।

राजगृही नगरी में विपुलाचल पर्वत था धन्य हुआ।
श्रावण कृष्णा एकम को जहाँ समवसरण जिनवर का बना।।
राजा श्रेणिक ने तब, प्रभु भक्ती करी अपार।
गौतम गणधर वर्ष मनाकर, बोलो जय जयकार।।2।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी की सबको प्रेरणा मिली।
गणधर वाणी पढ़ने की ''चंदनामती'' देशना मिली।।
इसीलिए यह उत्सव, आया है पहली बार।
गौतम गणधर वर्ष मनाकर बोलो जय जयकार।।3।।

विषय-सूची

क्र.स.	विषय	पृष्ठ नं.
1.	श्री गौतम गणधरदेव अभिषेक विधि	9
2.	गणधरवलय यंत्र अभिषेक विधि	14
3.	भगवान श्री महावीर जिन पूजा	21
4.	श्री गौतम गणधर पूजा	31
5.	दिव्यध्वनि पूजा	39
6.	आरती	47
7.	भजन	48

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनिस्वामिने श्रीमहावीरतीर्थंकराय नमः।

श्री गौतम गणधरदेव अभिषेक विधि

जलाभिषेक

व्योमापगादितीर्थोद्भवेनातिस्वच्छवारिणा।
अभिषिञ्चे जगत्पूज्यं, गौतमस्वामिनं मुदा।।1।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रजलेन श्रीगौतमस्वामिनं अभिषेचयामि स्वाहा।

-अर्घ्य-

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे मुनिनाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

सद्यः पीलितपुण्ड्रेक्षुरसेन शर्करादिना।
अभिषिञ्चे जगत्पूज्यं, गौतमस्वामिनं मुदा।।2।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रइक्षुरसेन श्रीगौतमस्वामिनं अभिषेचयामि स्वाहा।

-अर्घ्य-

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे मुनिनाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृताभिषेक

कनत्काञ्चनवर्णेन सद्यः सन्तप्तसर्पिषा।
अभिषिञ्चे जगत्पूज्यं, गौतमस्वामिनं मुदा।।3।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रघृतेन श्रीगौतमस्वामिनं अभिषेचयामि स्वाहा।

-अर्घ्य-

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे मुनिनाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्धाभिषेक

सद्गोक्षीरप्रवाहेन शुक्लध्यानाकरेण वा।
अभिषिञ्चे जगत्पूज्यं, गौतमस्वामिनं मुदा।।4।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रदुग्धेन श्रीगौतमस्वामिनं अभिषेचयामि स्वाहा।

-अर्घ्य-

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे मुनिनाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दध्यभिषेक

हिमपिण्डसमानेन दध्ना पुण्यफलेन वा।
अभिषिञ्चे जगत्पूज्यं, गौतमस्वामिनं मुदा।।5।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रदध्ना श्रीगौतमस्वामिनं अभिषेचयामि स्वाहा।

-अर्घ्य-

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे मुनिनाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वौषधि अभिषेक

ॐ ह्रीं परमपवित्रसर्वौषधिना श्रीगौतमस्वामिनं अभिषेचयामि स्वाहा।।6।।

-अर्घ्य-

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे मुनिनाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुःकलशाभिषेक

हेमोत्पन्नचतुःकुम्भैर्नानातीर्थाम्बुपूरितैः ।
अभिषिञ्चे जगत्पूज्यं, गौतमस्वामिनं मुदा।।7।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रचतुष्कोणकलशैः श्रीगौतम-स्वामिनं अभिषेचयामि स्वाहा।

-अर्घ्य-

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे मुनिनाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन लेपन

ॐ ह्रीं परमपवित्रचंदनलेपनं करोमीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

ॐ ह्रीं सुमनः सुखप्रदाय पुष्पवृष्टिं करोमि स्वाहा।

मंगल आरती

ॐ ह्रीं मंगलारार्तिकावतरणम् करोमि स्वाहा।

सुगंधित जल से अभिषेक

दिव्यद्रव्यौघमिश्रेण सुगन्धेनाच्छवारिणा।
अभिषिञ्चे जगत्पूज्यं, गौतमस्वामिनं मुदा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः सुगंधितजलेन श्रीगौतमस्वामिनं अभिषेचयामि स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

स्नापयित्वेति तोयाद्यैर्येऽर्चयन्ति गणिं क्रमात्।
प्राप्य विश्वोद्भवा भूतीर्भवन्ति तत्समाः क्रमात्।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने नमः।

गणधरवलय यंत्र अभिषेक विधि

अथ यन्त्रोद्धारः (यन्त्रलेखनमित्यर्थः)

-अनुष्टुप्-

षट्कोणचक्रमध्ये तु, क्ष्मामधः श्रीं च मस्तके।
अर्हं झ्वीं ह्रीं लिखेत्पार्श्वे, दक्षिणे वामतः क्रमात्।।1।।

श्रीदक्षिण सप्रणवाऽसि, आ उ सा सहोमकम्।
कोणेष्वप्रतिचक्रे फट्, सव्येन स्थापयेत् क्रमात्।।2।।

कोणान्तरे विचक्राय, स्वाहा षड् बीजमालिखेत्।
कोणाग्रेषु लिखेत् श्रीह्री-धृतिकीर्तिमतीन्दिराः।।3।।

वसु द्व्यष्ट त्रिहाष्टेषु, पत्रेषु ऋद्धिमन्त्रकान्।
लिखित्वा मायया वेष्ट्य, क्रों रुद्धं गणधारकम्।।4।।

यन्त्रं भूमण्डलोपेतं, लिखित्वा स्थापयेत् सुधीः।
स्वर्णे रुप्येऽथवा ताम्रे, भूर्जे संसिद्धिकारकम्।।5।।

इति यन्त्रोद्धारः

गणधरवलय यंत्र का अभिषेक

अथ गणधरवलययन्त्रस्नपनम्

नत्वा सिद्धं विशुद्धेद्धं, चिन्मात्रं लोकमूर्धगम्।
तदग्रे स्थापये कुम्भं, वारिपूरं हिरण्यजम्।।1।।

इति कलशस्थापनम्

गंगादिवरपानीयै - र्हिमचन्दनशीतलैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।2।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गंगादितीर्थपवित्रतरजलेन स्नपयामि स्वाहा।

इति तीर्थोदकाभिषेकः

-आर्या-

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।3।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-अनुष्टुप्-

पुण्ड्रेक्षुनालिकेरादि-रसै रम्यैः शुभावहैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।4।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पवित्रतरेक्ष्वादिरसेन स्नपयामि स्वाहा।

-इतीक्ष्वादिरसाभिषेकः-

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वांगपुष्टिदै रम्यै, राज्यैर्घ्राणादिसत्प्रियैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।5।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पवित्रतरघृतेन स्नपयामि स्वाहा।

–इति घृताभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।
ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्रैः स्निग्धैर्वरक्षीरैः, शुक्लध्यानोज्ज्वलैः परैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।6।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं ह्रीं नमः पवित्रतरदुग्धेन स्नपयामि स्वाहा।

–इति दुग्धाभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।
ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यपिण्डैरिवाखण्डैः, स्थिरैर्दधिभिरुत्प्रभैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।7।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं

ह्रीं नमः पवित्रतरदध्ना स्नपयामि स्वाहा।

–इति दध्यभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।
ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवंगेलासुकर्पूरचूर्णैः पूर्णैः सुगन्धिभिः।
उद्वर्तयामि सद्भक्त्या, गणेशं कर्महानये।।8।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं ह्रीं नमः पवित्रतरसर्वौषधिभिः स्नपयामि स्वाहा।

–इति सर्वौषधिस्नपनं–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।
ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्वर्गैरिवोद्भूतैश्चतुष्ककलशामृतैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।9।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं

ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं ह्रीं नमः पवित्रतरचतुष्कलशैः स्नपयामि स्वाहा।

–इति चतुष्कलशस्नपनम्–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।
ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सुगन्धित जलाभिषेक–

कर्पूरचन्दनद्रव्य-व्यक्तैर्गन्धोदकैः शुभैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।10।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं ह्रीं नमः पवित्रतरगन्धोदकेन स्नपयामि स्वाहा।

–इति गन्धोदकाभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।
ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गंधोदक को मस्तक पर लगावें–

यदंगसंगितोयेन, याति पापं नृणां क्षणात्।
तदर्पये निजे मूर्ध्न्यघं तिष्ठति कथं मम।।11।।

–इति गंधोदकवन्दनम्–

स्नपयित्वेति ये भक्त्या, चायन्ते गणनायकम्।
भुक्त्वा स्वर्भूपदं मुक्तौ, सुखायन्ते सुखैषिणः।।12।।

इति पुष्पांजलिः।

।।इति श्रीगणधरवलययन्त्रस्नपनं समाप्तम्।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वाद-
नयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यो नमः।

भगवान श्री महावीर जिनपूजा

(तर्ज-तुमसे लागी लगन.....)

आपके श्रीचरण, हम करें नित नमन, शरण दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।टेक.।।
वीर सन्मति महावीर भगवन् !
आवो आवो यहाँ नाथ! श्रीमन्!
आप पूजा करें, शुद्ध समकित धरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –

(तर्ज-चंदन सा बदन.....)

–शंभु छंद –

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।

गंगानदि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आये हैं।
भव भव का कलिमल धोने को,श्रद्धा से अति हरषाये हैं।।
हे वीरप्रभो! महावीर प्रभो! त्रयधारा दें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
हरिचंदन कुंकुम गंध लिये, जिनचरण चढ़ाने आये हैं।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! चंदन लेकर, चर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
क्षीराम्बुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धोकर ले आये हैं।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।

हे वीरप्रभो! हम पुंज चढ़ा, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
मदनारिजयी तव चरणों में, हम अर्पण करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! पुष्पों को ले, पूजा करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाये हैं।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! चरु अर्पण कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।
हे वीरप्रभो! तुम आरति कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
हे वीर प्रभो! हम धूप जला, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।

एला केला अंगूरों के, गुच्छे अतिसरस मधुर लाये।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर हर्षाये।।
हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाये हैं।
निजगुण अनंत की प्राप्ति हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
''सज्ज्ञानमती'' सिद्धी देकर, नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपेंद्रवज्रा छंद –

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निजस्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले है भवदधि किनारा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद –

सिद्धार्थ नृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथी, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भ-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्म-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी तिथी, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षा-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथी, गौतम मुनी गणधर बनें।
तव दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाण लक्ष्मी वरणकर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाण-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

महावीर सन्मति प्रभो! शिवसुख फल दातार।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, नमूँ अनंतों बार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

–दोहा –

चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपति साकार।।1।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा.....)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर! महावीर! वीर! अतिवीर! प्रभो!
जय जय गुणसागर वर्धमान! जय त्रिशलानंदन! धीर प्रभो!।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।2।।
जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।

जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।
सब जात विरोधी जन्तूगण, आपस में मिलकर हरषायें।।3।।

चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।4।।

श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानी, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनरनुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।5।।

प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।6।।

मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती'' निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।7।।

–घत्ता –

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद –

महावीर प्रभु को जो भविक जन, पूजते शुचि भाव से।
निर्वाण लक्ष्मीपति जिनेश्वर, को नमें अति चाव से।।
वे भव्य नर सुर के अतुल, संपत्ति सुख पाते घने।
फिर अन्त में शुचि ''ज्ञानमति'', निर्वाण लक्ष्मीपति बने।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

श्री गौतम गणधर पूजा

-गीता छंद-

गणपति गणीश गणेश गणनायक गणीश्वर नाम हैं।
गणनाथ गणस्वामी गणाधिप आदि नाम प्रधान हैं।।
उन इंद्रभूति गणीन्द्र गौतम स्वामि गणधर को जजूँ।
स्थापना करके यहाँ सब कार्य में मंगल भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नन्दीश्वर पूजन चाल

रेवानदि का शुचि नीर, बाहर मल धोवे।
तुम चरणन धारा देत, अंतर्मल खोवे।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन घनसार, तन का ताप हरे।
तुम पद पूजा तत्काल, अंतर्ताप हरे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित मुक्तारूप, धोकर भर लीने।
तुम पद आगे धर पुंज, आतम गुण चीन्हे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक वर हरसिंगार, सुरतरु सुमन लिया।
तुम कामजयी पद पूज, निजमन सुमन किया।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू बरफी पकवान, सुवरण थाल भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, तुम पद पूज करें।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, दीपक ज्योति जले।
तुम पद पूजत तत्काल, अंतर ज्योति जले।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत धूम्र उड़े।
निज अशुभ करम हों भस्म, उसकी धूम्र उड़े।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी सेव, उत्तम फल लाऊँ।
गणनाथ चरण युगपूज, वांछित फल पाऊँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।8।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य करूँ।
अनुपम निजपद के हेतु, तुम पद भक्ति करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणन जल की धार, देकर शांति करूँ।
सब जग में शांती हेतु, शांतीधार करूँ।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुलादिक कुसुम मंगाय, पुष्पांजलि कर में।
सब विघ्न अमंगल दोष, नाशूँ इक पल में।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने नमः (108 या 9 बार)।

जयमाला

-दोहा-

परमब्रह्म परमात्मा, परमानंद निलीन।
गाऊँ तुम गुणमालिका, होवे भवदुखक्षीण।।1।।

-रोला छंद-

जय जय गणधर देव, जय जय गुण गण स्वामी।
महावीर जिनदेव, समवसरण में नामी।।

जय जय विघ्न समूह, नाशक विश्व प्रसिद्धा।
सप्तऋद्धि परिपूर्ण, चार विज्ञान समृद्धा।।2।।
इन्द्रभूति तुम नाम, महाविभूति प्रदाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता।।
शास्त्र महोदधि तीर्ण, पांच शतक तुम छात्रा।
तुम सम ही दो भ्रात, गर्वित सहित सुछात्रा।।3।।
छ्यासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सौधर्मेंद्र उपाय, कीनो अति सुखठानी।।
गौतमशाला माहिं, वृद्धरूप धर आया।
तुम सब विद्याधीश, इससे तुम तक आया।।4।।
मेरे गुरु महावीर, आतम ध्यान लगाये।
भूल गया मैं अर्थ, जो जो श्लोक पढ़ाये।।
यदि दो अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूँ मैं।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरु के ये चहूँ मैं।।5।।
त्रैकाल्यं इत्यादि, जब यह श्लोक पढ़ा है।
अर्थ बोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है।।

चलो गुरू के पास, मैं शास्त्रार्थ करूँगा।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूँगा।।6।।
उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा।
वचन ''जयतु भगवान्'' स्तुति रूप उचारा।।7।।
निज मिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुख दीना।।
द्वादशांग मय ग्रंथ, गौतम गुरु ने कीने।
गणधर पद को पाय, सब ऋद्धी धर लीने।।8।।
वीर प्रभू निर्वाण, के दिन केवल पायो।
इन्द्र सभी मिल आय, गंधकुटी रचवायो।।
केवलज्ञान कल्याण, पूजा इन्द्र रचे हैं।
केवलज्ञान महान, लक्ष्मी को भी जजे हैं।।9।।
इसी हेतु सब लोग, दीपावली निशा में।
गणपति लक्ष्मी देवि, पूजें धनरुचि मन में।।
बारह वर्ष विहार, भवि उपदेश दिया है।
पुनः अघाति विनाश, मोक्ष प्रवेश किया है।।10।।

गणधर पूजा सत्य, सर्वसंपदा देवें।
धन धान्यादिक पूर, मोक्ष संपदा देवें।।
इस हेतू हम आज, गणधर चरण जजे हैं।
''केवलज्ञान'' प्रकाश, हेतू आप भजे हैं।।11।।

-दोहा-

चौबीसों जिनराज की, गणधर गणना जान।
चौदह सौ बावन कही, तिनपद जजूँ महान्।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिने जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

जो पूजें गणधर चरण, करें विघ्नघन हान।
जग के सब सुख भोग के, क्रम से लें निर्वाण।।

।।इत्याशीर्वादः।।

दिव्यध्वनि पूजा

-शंभु छंद-

तीर्थंकर के मुख से खिरती, अनअक्षर दिव्यध्वनी भाषा।
बारह कोठों में सबके हित, परिणमती सर्वजगत् भाषा।।
गणधर गुरु जिनध्वनि को सुनकर, बाहर अंगों में रचते हैं।
हम दिव्यध्वनी का आह्वानन, करके भक्ती से यजते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामय-दिव्य-ध्वनि-वाणीसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामय-दिव्य-ध्वनि-वाणीसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामय-दिव्य-ध्वनि-वाणीसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

मुनीचित्त सम नीर पावन लिया है।
सरस्वति चरण तीन धारा दिया है।।

जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तपे स्वर्णरस सम घिसा गंध लिया।
सरस्वति चरण चर्च कर सौख्य पाया।।
जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः चदंनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले श्वेत अक्षत अखंडित लिये हैं।
प्रभो कीर्ति को पुंज अर्पण किये हैं।।
जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोंगरा केतकी पुष्प लेके।
चढ़ाऊँ प्रभू की ध्वनी को रुची से।।

जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मलाई पुआ खीर पूरी बनाके।
चढ़ाऊँ प्रभू कीर्ति को क्षुध विनाशे।।
जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जले दीप ज्योती दशों दिक् प्रकाशे।
जजें नाथ ध्वनि को स्वपर ज्ञान भासे।।
जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनिपात्र में धूप खेऊँ सुगंधी।
सरस्वति कृपा से करूँ मोह बंदी।।

जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अंगूर केला फलों को।
चढ़ाऊँ महामोक्ष फल हेतु ध्वनि को।।
जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी लिये स्वर्ण पुष्पों सहित मैं।
करूँ अर्घ अर्पण सरस्वति चरण में।।
जजूं तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

गंगा नदि का नीर ले, शारदा मां पद कंज।
त्रय धारा देते मिले, मुझे शांति सुखकंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जय सब विद्या के ईश आप की, दिव्यध्वनी जो खिरती है।
वह तालु ओष्ठ कंठादिक के, व्यापार रहित ही दिखती है।।1।।

अठरह महाभाषा सातशतक, क्षुद्रक भाषामय दिव्य धुनी।
उस अक्षर अनक्षरात्मक को, संज्ञी जीवों ने आन सुनी।।
तीनों संध्या कालों में वह, त्रय त्रय मुहूर्त स्वयमेव खिरे।
गणधर चक्री अरु इन्द्रों के, प्रश्नों वश अन्य समय भि खिरे।।2।।

भव्यों के कर्णों में अमृत बरसाती शिव सुखदानी है।
चैतन्य सुधारस की झरणी, दुखहरणी यह जिनवाणी है।।
जन चार कोश तक उसे सुने, निजनिज के सब कर्तव्य गुने।
नित ही अनंत गुण श्रेणि रूप परिणाम शुद्ध कर कर्म हने।।3।।

छह द्रव्य पाँच है अस्तिकाय, अरु तत्त्व सात नवपदार्थ भी।
इनको कहती ये दिव्य ध्वनि, सबजन हितकर शिवमार्ग सभी।।
आनन्त्य अर्थ के ज्ञान हेतु जो बीज पदों का कथन करे।
अतएव अर्थकर्ता जिनवर उनकी ध्वनि मेघ समान खिरे।।4।।

उन बीजपदों में लीन अर्थ प्रतिपादक बारह अंगों को।
गणधर गूँथे अतएव ग्रंथकर्ता मानें वंदूँ उनको।।
जिन श्रुत ही महातीर्थ उत्तम, उसके कर्ता तीर्थंकर हैं।
वे सार्थक नाम धरें जग में, इससे तिरते भवसागर है।।5।।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।

पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य–

श्रुतज्ञान सकल यह द्वादशांगमय जिनवर ध्वनि से प्रकट सांच।
इक सौ बारह करोड़ तेरासी लाख अठावन सहस पाँच।।
इन द्वादशांग अरु अंगबाह्य को नित प्रति वंदन करता हूँ।
भक्ती से अर्घ चढ़ा करके श्रुतज्ञान ज्योति को धरता हूँ।।41।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतगणधरदेव-ग्रथित-द्वादशांग-अंगबाह्यस्वरूप-दिव्यध्वनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामय-दिव्यध्वनिभ्यो नमः।

जयमाला

–शंभु छंद–

जय जय तीर्थंकर धर्म चक्रधर, जय प्रभु समवसरण स्वामी।
जय जय त्रिभुवन त्रयकाल एक, क्षण में जानो अंतर्यामी।।

जय जय प्रभुवाणी कल्याणी, गंगाजल से भी शीतल है।
जयजय शमगर्भित अमृतमय, हिमकण से भी अति शीतल है।
चंदन अरु मोतीहार चंद्रकिरणों से भी शीतलदायी।
स्याद्वादमयी प्रभु दिव्यध्वनी, मुनिगण को अतिशय सुखदायी।।6।।

वस्तू में धर्म अनंत कहे, उन एक एक धर्मों को जो।
यह सप्तभंगि अद्भुत कथनी, कहती है सात तरह से जो।।
प्रत्येक वस्तु में विधि निषेध, दो धर्म प्रधान गौण मुख से।
वे सात तरह से हों वर्णित, नहिं भेद अधिक अब हो सकते।।7।।

प्रत्येक वस्तु है अस्तिरूप, अरु नास्तिरूप भी है वो ही।
वो ही है उभयरूप समझो, फिर अवक्तव्य भी है वो ही।।
वो अस्तिरूप अरु अवक्तव्य, फिर नास्ति अवक्तव भंग धरे।
फिर अस्तिनास्ति अरु अवक्तव्य, ये सात भंग हैं खरे खरे।।8।।

इस सप्तभंगमय सिंधू में, जो नित अवगाहन करते हैं।
वे मोह राग द्वेषादि रूप, सब कर्म कालिमा हरते हैं।।
वे अनेकांतमय वाक्य सुधा, पीकर आतमरस चखते हैं।
फिर परमानंद परमज्ञानी होकर, शाश्वत सुख भजते हैं।।9।।

मैं निज अस्तित्व लिये हूँ नित, मेरा पर में अस्तित्व नहीं।
मैं चिच्चैतन्य स्वरूपी हूँ, पुद्गल से मुझ नास्तित्व सही।।

इस विध निज को निज के द्वारा, निज में ही पाकर रम जाऊँ।
निश्चयनय से सब भेद मिटा, सब कुछ व्यवहार हटा पाऊँ।।10।।

भगवन्! कब ऐसी शक्ति मिले, श्रुतदृग से निजको अवलोकूँ।
फिर स्वसंवेद्य निज आतम को, निज अनुभव द्वारा मैं खोजूँ।।
संकल्प विकल्प सभी तज के, बस निर्विकल्प मैं बन जाऊँ।
फिर केवल 'ज्ञानमती' से ही, निजको अवलोकूँ सुख पाऊँ।।11।।

–दोहा–

सब भाषामय दिव्यध्वनि, वाङ्मय गंगातीर्थ।
इसमें अवगाहन करूँ, बन जाऊँ जग तीर्थ।।12।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

दिव्यध्वनि की अर्चना, दे श्रुतज्ञान महान।
'ज्ञानमती' कैवल्य कर, दे अविचल स्थान।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

ॐ जय गौतम स्वामी, स्वामी जय गणधर स्वामी।
द्वादशांग के कर्त्ता, मनपर्ययज्ञानी।। ॐ जय.।।

तीर्थंकर महावीर के, शिष्य प्रमुख गणधर। स्वामी.....
इन्द्रभूति गौतम यह, नाम मिला सुखकर ।।ॐ जय.।।1।।

श्रावण कृष्णा एकम, गणधर पद पाया। स्वामी .....
तीर्थंकर महावीर प्रभू ने, तुमको अपनाया।।ॐ जय.।।2।।

दिव्यध्वनि सुन प्रभु की, श्रुत रचना कर दी। स्वामी....
द्वादशांग से जग में, श्रुतसरिता भर दी।।ॐ जय.।।3।।

अंग पूर्व श्रुत अंश आज भी, है उपलब्ध यहाँ। स्वामी....
चतुरनुयोगों में निबद्ध वह, ज्ञान प्रसिद्ध कहा।।ॐ जय.।।4।।

गणधर गुरु की आरति, ऋद्धि-सिद्धि देवे। स्वामी.....
पुनः "चंदनामती" ज्ञाननिधि, सुख संपति लेवें।। ॐ जय.।।5।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–जिन्दगी प्यार का गीत है.....

गौतम गणधर की वाणी सुनो,
ज्ञान अमृत के स्वादी बनो।
वीर प्रभु दिव्यध्वनि को सुनो,
अपने आतम में उसको गुनो।।टेक.।।
आज हम सबका यह पुण्य है, पाया धरती पे नर जन्म है।
इसमें जिन भक्ति ही मुख्य है, गुरु की वाणी से शिव सौख्य है।
वीर वाणी का अमृत चखो,
गुरु गौतम के श्रुत को सुनो।। गौतम.।।1।।
आयुष्मन्तों ! सुना मैंने है, ये वचन गणधर स्वामी कहें।
मुनि–श्रावक ये दो धर्म हैं, शक्तिसम इनका पालन करें।।
सुदं मे आउस्संतो सुनो,
श्रुत का चिन्तन करो औ गुनो।।गौतम.।।2।।
गणिनी श्री ज्ञानमती माता ने, गणधर वाणी बताई हमें।
उसको प्रतिदिन पढ़ें हम सभी, "चंदनामति" अमर हो कृती।।
वीर प्रभु के चरण में नमो,
गुरु गौतम के भी पद नमो।।गौतम.।।3।।